२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

1

आज हम इसे कहाँ प्राप्त कर सकते हैं?

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

2

यह कहानी प्राचीन यूनान में रहने वाले नवयुवक की है जो सच्चाई को खोजना चाहता था। उसने एक वृद्ध व्यक्ति के साथ सम्पर्क किया जो उस शहर में सबसे बुद्धिमान पुरूष माना जाता था। उस जवान पुरूष ने वृद्ध व्यक्ति से पूछा, 'श्रीमान कृपया मुझे बताइए, मैं सच्चाई को किस प्रकार खोज सकता हूँ? क्या आप उसके लिए अगुवाई कर सकते हैं? वह वृद्ध खड़ा हुआ और उसने चलना आरंभ किया उस नवयुवक पुरूष ने उसका अनुसरण किया। वे शहर की गलियों को पार कर के समुद्र के किनारे गए। वह वृद्ध पुरुष पानी के अन्दर चलता गया। जब पानी लगभग उनकी कमर तक आ गया, तो उस वृद्ध ने जवान से कहा। अपने हाथ को अपने सिर के ऊपर रखने के लिए कहा और उसे पानी के अन्दर डुबा दिया। तीन बार वह नवयुवक हवा में श्वास लेने के लिए ऊपर आया। तीन बार उस वृद्ध व्यक्ति ने उसके सिर को फिर से नीचे की ओर धक्का दिया। तीसरी बार, वह नवयूवक पुरुष चिल्लाया, "मैं केवल सच्चाई खोजना चाहता था।" उस वृद्ध ने जवाब दिया, '

"जिस प्रकार आप ने हवा में श्वास लेने की इच्छा की उसी प्रकार सच्चाई को जानने की इच्छा करने से आप

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

सच्चाई को जान जाएँगे।"

परमेश्वर हमसे सच्चाई को नहीं छुपा रहा है।

यिर्मयाह भविष्यवक्ता कहता है,

3

(मुलपाठ : यिर्मयाह २९ : १३)

"तुम मुझे ढूढ़ोगे और पाओगे भी, क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।"

यिर्मयाह २९ : १३

4

यह कहा गया है कि हम सब का जन्म हमारे अन्दर एक परमेश्वर -रूपी खालीपन लेकर हुआ है। ऐसा लगता है कि हम सब में किसी ऐसी वस्तु की अभिलाषा है जो हमारे पास नहीं। उपचेतन रूप से, हम उस वस्तु को ढूंढ़ते रहते हैं जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते परन्तु हम जानते हैं कि हमें इसकी आवश्यकता है!

5

इसलिए बेचैनी और बोरियत में हम जीवन की इस शून्यता को प्रसिद्धि, धन, नशीले पदार्थ, शराब, सम्पत्ति, और मनोरंजन से भरने की चेष्टा करते हैं। पर ये सब वस्तुएँ पूर्ण सन्तोष नहीं दे सकतीं।

6

और कभी न कभी, एक नींद न आने वाली रात में प्राचीन भविष्यवक्ता का यह प्रश्न हमारे मस्तिष्क में गूजेंगा:

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

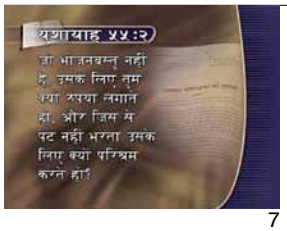

7

(मूलपाठ : यशायाह ५५ : २)

"जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिए तुम क्यों रुपया लगाते हो, और जिस से पेट नहीं भरता उसके लिए क्यों परिश्रम करते हो?"

यशायाह ५५ : २

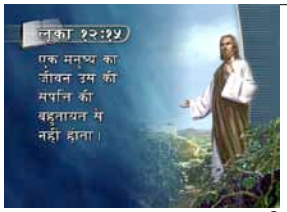

8

(मूलपाठ : लूका १२ : १५)

उसने कहा, "एक मनुष्य का जीवन उस की सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।"

लूका १२ : १५

9

आज लोग अपने बाहर की एक शक्ति की आवश्यकता को अनुभव कर सकते हैं।

यह कुछ भी नया नहीं है।

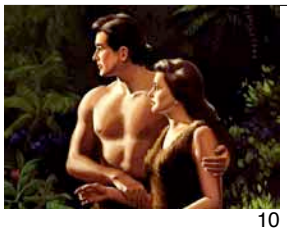
10

जब से मनुष्य ने अदन की वाटिका में अपनी राह पर चलने को चुना है, तब से उसके पास यह अनोखा खालीपन है जिसे केवल परमेश्वर ही भर सकता है।

11

जंगल में भटकने वाले इस्राएलियों को परमेश्वर ने भूखा रखने की अनुमति दी ताकि वे उसकी आवश्यकता को पहचान सकें। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों से बातें की, वह कहता है,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

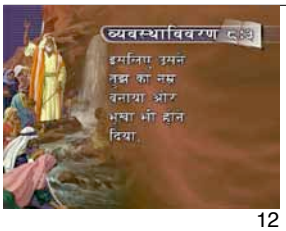

12

(मूलपाठ : व्यवस्थाविवरण ८ : ३)

"इसलिए उसने तुझ को नम्र बनाया और भूखा भी होने दिया,

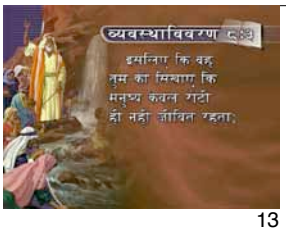

13

...इसलिए कि वह तुम को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता;

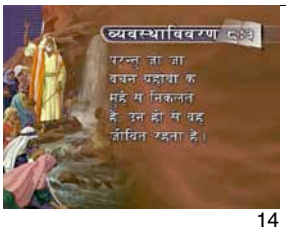

14

परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुहँ से निकलते हैं, उन ही से वह जीवित रहता है।"

व्यवस्थाविवरण ८:३

15

प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर हमें हमारे अन्दर की भूख और बेचैनी का अनुभव करने देता है, ताकि हम परमेश्वर की ओर हाथ बढ़ाएँ और उसे हमारी इच्छाओं को सन्तुष्ट करने दें।

16

आज हम अनेक प्रकार के धर्मो में अत्यधिक रूचि दिखाते हैं। हम देखते हैं कि आज धर्मों को एक करने के लिए और सम्प्रदाय की दीवारों को गिराने के लिए बहुत जोर दिया जा रहा है। विभिन्न प्रकार के धर्मो और कलीसियाओं पर अध्ययन और विचार हो रहा है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

17

नई कलीसियाएं बड़ी तेजी से संसार के चारो ओर उभर रही हैं। प्रत्येक कलीसिया परमेश्वर के विशेष लोग होने का दावा करती है जिसके पास इस पृथ्वी पर सबके लिए सच्चाई का संदेश है। तब भी उन दावों का ध्यान करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सारे दावे सच्चे नहीं हो सकते।

18

प्रत्येक का यह दावा है कि बाइबिल उनके विश्वास की नींव है, परन्तु उनकी शिक्षाएँ एकदम भिन्न हैं।

19

आज्ञाकारी लोग धर्मों के इन दावों को किस प्रकार जाँच सकते हैं यह जानने के लिए कि सच्चाई क्या है। क्या मसीही संसार के अन्दर परमेश्वर के कुछ विशेष लोग हैं जिन्हें वह अपनी कलीसिया के रूप में पहचानता है? ऐसा है, क्योंकि पौलुस ने लिखा:

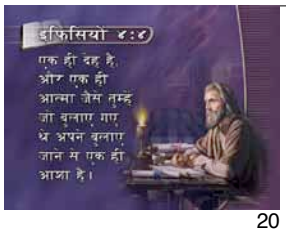

20

(मूलपाठः इफिसियों ४:४)
"एक ही देह है, और एक ही आत्मा जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

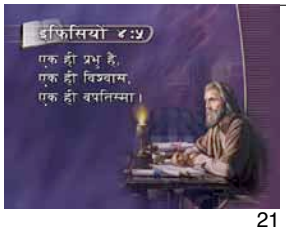

21

एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा;

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

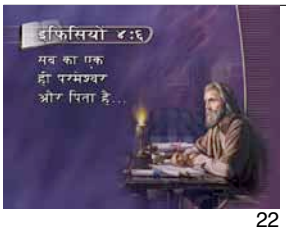

22

सब का एक ही परमेश्वर और पिता है।"

इफिसियों ४:४-६

23

(मूलपाठः १ तीमुथियुस ३:१५)

पौलुस ने अपने जवान मित्र तीमुथियुस को लिखा और कहा, "मैंने लिखा था कि जान लें कि परमेश्वर के घर में कैसा बर्ताव करना चाहिए,

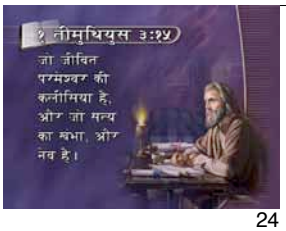

24

जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है।"

१ तीमुथियुस ३:१५

पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है कि परमेश्वर की कलीसिया आज सत्य का खंभा और नेव है। परन्तु हम किस प्रकार जाने कि कौन सी कलीसिया सच्ची है?

25

बहुत से सम्प्रदाय हैं, बहुत वादविवाद है, और धार्मिक समाज में बहुत गड़बड़ है।

26

मित्रों, बाइबिल के अनुसार यीशु कभी भी किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं चाहते थे और ना ही इतनी सारी कलीसियाएँ। उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने से थोड़ी देर पूर्व यीशु ने प्रार्थना की:

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

27

(मूलपाठः यूहन्ना १७:२१)

"कि वे सब एक हों, जैसे तू हे पिता मुझ में, और मै तुझ में हूँ;

28

वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।"

यूहन्ना १७ : २१, नया किंग जेम्स अनुवाद

यीशु चाहता था कि दुनिया उसके अनुयायियों को उनकी एकता और प्रेम के द्वारा पहचानने में समर्थ हों। मसीह अपनी कलीसियों में कोई विभाजन नहीं चाहता था।

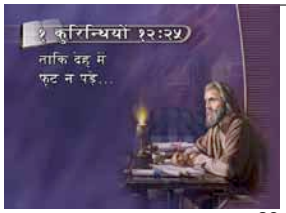

29

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १२:२५)

वास्तव में, पौलुस ने लिखा "ताकि देह में फूट न पड़े।"

१ कुरिन्थियों १२:२५

30

परन्तु पौलुस ने कहा कि स्वधर्मत्यागी आएंगे और उनके साथ विभाजन आएगा!

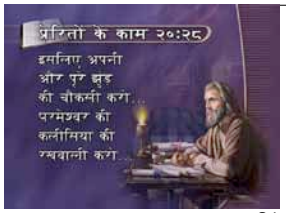

31

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २०:२८-३)

हमने पढ़ाः "इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो ... परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो ...

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

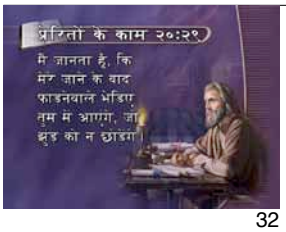

32

मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड़ को न छोड़ेंगे।

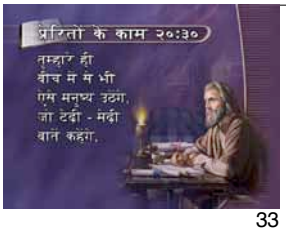

33

तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो टेढ़ी -मेढ़ी बातें कहेंगे,

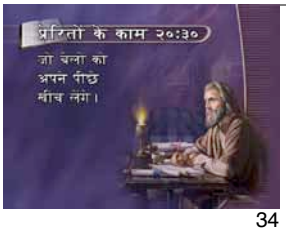

34

जो चेलों को अपने पीछे खींच लेंगे।"

प्रेरितों के काम २०:२८-३०

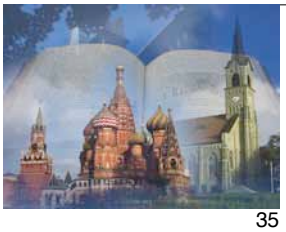
35

जब हम कलीसिया के इतिहास के पृष्ठों को पलटते हैं, तो हम यह पाते हैं कि ऐसा ही हुआ। झूठे शिक्षक उठे, और कुछ लोगों ने अपनी गलतियाँ स्वीकार की और कलीसिया को छोड़ दिया। दूसरे भ्रमित हो गए। शिष्यों को बहकाया गया और लोग यीशु की शिक्षा से धीरे- धीरे दूर हो गए। परन्तु इनता होते हुए भी परमेश्वर की एक कलीसिया थी जो उसकी शिक्षाओं के प्रति विश्वस्त थी।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

36

परन्तु कुछ लोग कहते हैं, "प्रत्येक धर्म की शिक्षाओं का अध्ययन करने में पूरा जीवन लग जाएगा यह जानने के लिए कि परमेश्वर की सच्ची कलीसिया कौन सी है?

परन्तु एक सरल रास्ता है।

परमेश्वर का रास्ता!

37

सरकार के अधिकारी हमें बताते हैं कि एक बनावटी नोट से एक सच्चा नोट बहुत आसानी से पहचाना जा सकता है। वे सच्चे बिल की विशेषताएं गहराई से जानते हैं।

38

उस सच्चे नोट के कागज के रेशे की बनावट को पहचानते हैं, और स्याही के रंग को, चिन्ह, और नम्बरों के सही क्रमांक को जानते हैं। (नोट का वर्णन कीजिए) जब वे नोट को देखते हैं,तो वे शीघ्र ही उसकी सच्चे नोट की विशेषताओं से तुलना कर सकते हैं। यदि उस नोट में एक भी विशेषता की कमी है, तो वह नकली है।

39

और यही सच्चाई के साथ भी है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

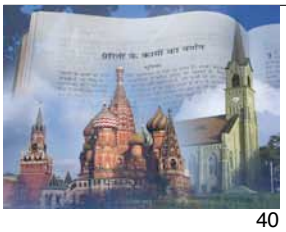

40

यदि हम परमेश्वर की सच्ची कलीसिया की बाइबिल में दी गई विशेषताएं जानते हैं, तो हमें लम्बे समय तक सभी कलीसियाओं की शिक्षाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर मनुष्य को अनुमान लगाने के लिए नहीं छोड़ देता, क्योंकि उसने अपने वचन में सच्चाई दी है।

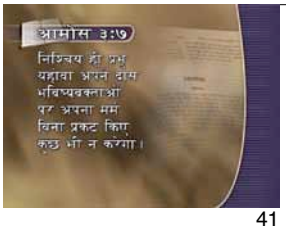

41

(मूलपाठः आमोस ३:७)

"निश्चय ही प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यवक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी न करेगा।"

आमोस ३:७

42

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बाइबिल में पाई जाने वाली सारी भविष्यवाणियों का सारांश है। यह लोगों को अंतिम दिनों की विशेष झलक दिखाती है। यहाँ पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में पाए जाने वाले स्वधर्म त्यागी और धार्मिक भ्रम में पड़े हुओं की बातें बताई गई हैं। प्रकाशितवाक्य मसीह की कलीसिया और शैतान के बीच के संघर्ष की भविष्यवाणी करती है। अध्याय १२ मसीह के समय से ले कर दुनिया के अंत तक का कलीसिया का इतिहास दिखाता है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

43

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१,२)

"फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया, अर्थात एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी,

44

और चांद उसके पावों तले था और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट थाः

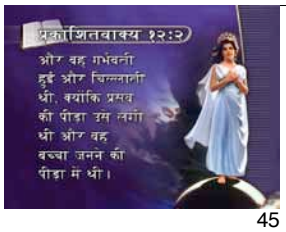

45

और वह गर्भवती हुई और चिल्लाती थी, क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी।"

प्रकाशितवाक्य १२ : १, २

46

यहाँ परमेश्वर एक स्त्री का चित्र देता है जो सूर्य की श्वेत पोशाक और बारह तारों का मुकुट पहने चाँद पर खड़ी है। इन सब का क्या अर्थ है? बाइबिल की भविष्यवाणी में एक शुद्ध स्त्री परमेश्वर के लोगों का प्रतीक है – उसकी कलीसिया। यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने लिखाः

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

47

(मूलपाठः यिर्मयाह ६:२)

"सिय्योन की सुन्दर और सुकुमार बेटी को मैं नाश करने पर हूँ।"

यिर्मयाह ६:२

और सिय्योन कौन है? यशायाह द्वारा परमेश्वर ने कहा,

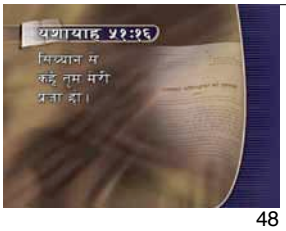

48

(मूलपाठः यशायाह ५१:१६)

"सिय्योन से कहूँ तुम मेरी प्रजा हो।"

यशायाह ५१ : १६

जब हम इन दोनों पदों को मिलाते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपनी सच्ची कलीसिया को दर्शाने के लिए एक निर्दोष स्त्री का प्रयोग किया है।

पौलुस प्रेरित ने कुरिन्थियों की कलीसिया का वर्णन करने के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया है।

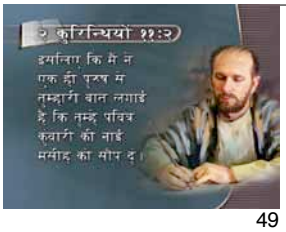

49

(मूलपाठः २ कुरिन्थियों ११:२)

"इसलिए कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हे पवित्र कुंवारी की नाई मसीह को सौप दूं।"

२ कुरिन्थियों ११:२

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

50

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १७:३-५)

यद्यपि यूहन्ना को एक अन्य स्त्री दिखाई गई जिसका उसने प्रकाशितवाक्य के १७ अध्याय में वर्णन किया है : "और मैंने किरमिजी रंग के पशु पर जो निन्दा के नामों से छिपा हुआ था एक स्त्री को बैठे हुए देखा... "

51

"यह स्त्री बैंजनी और किरमिजी, कपड़े पहने थी और सोने और बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजी हुई थी,

52

उसके हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था।

53

और उसके माथे पर यह नाम लिखा था :

54

भेद बड़ा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता।"

प्रकाशितवाक्य १७:३-५

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

55

यह सांकेतिक भाषा अशुद्ध स्त्री का वर्णन करती है -झूठी कलीसिया।

गिरी हुई कलीसिया मसीह के साथ ईमानदार नहीं थी और उसने बाइबिल की सच्चाई के साथ समझौता कर लिया।

याकूब ने उन लोगों को जिन्होंने परमेश्वर की शिक्षाओं को छोड़ दिया है और दुनिया के लोगों से मिल गए हैं उनका वर्णन करने के लिए उसने समान शब्दों का प्रयोग किया है :

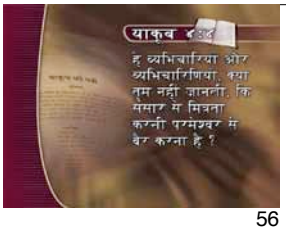

56

(मूलपाठः याकूब ४:४)

"हे व्यभिचारियों और व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है ?।"याकूब ४:४

57

एक गिरी हुई स्त्री एक झूठी कलीसिया को दर्शाती है, और एक शुद्ध स्त्री एक सच्ची कलीसिया को दर्शाती है। आइए, एक बार फिर शुद्ध स्त्री की भविष्यवाणी को देंखे।

शुद्ध स्त्री =शुद्ध कलीसिया

गिरी हुई स्त्री =झूठी कलीसिया

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

58

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:२,४)

"वह चिल्लाती थी, क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी

59

और वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ,

60

कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए।"

प्रकाशितवाक्य १२:४

यह अजगर कौन है जो उस स्त्री के समक्ष खड़ा हुआ कि जैसे ही वह बच्चा जने तो वह उसे निगल जाए?

61

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:७-९)

"फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकलने, और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

62

परन्तु प्रबल न हुए और स्वर्ग में उन के लिए फिर जगह न रही।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

63

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, गिरा दिया गया;

64

वह पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।"

प्रकाशितवाक्य १२:७-९

65

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:५)

प्रकाशितवाक्य भी उस बच्चे का वर्णन करता है: "और वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था।

66

और उसका बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुंचा दिया गया।"

प्रकाशितवाक्य १२:५

67

दुनिया के इतिहास में केवल एक ही बच्चा था जो लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था और जिसे "परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास पहुंचा दिया गया।।" और वह यीशु था।

मसीह के दूसरे आगमन के विषय में बात करते हुए,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

68

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:१५)

यूहन्ना के कहा, "और जाति जाति को मारने के लिए उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है।

69

और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा ..."

प्रकाशितवाक्य १९:१५

पौलुस कहता है कि कैसे यीशु "परमेश्वर के सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया था,"

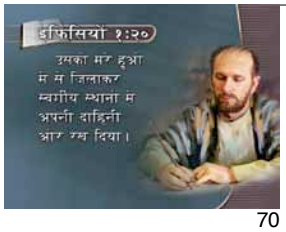

70

(मूलपाठः इफिसियों १:२०)

जब परमेश्वर ने "...उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर रख दिया।"

इफिसियों १:२०

71

वह युद्ध जो स्वर्ग में आरम्भ हुआ था वह हमारे संसार में आ गया। मूर्तिपूजक रोमियों के द्वारा शैतान ने यह प्रयत्न किया कि वह यीशु के प्राण उसके जन्म के बाद ही ले लेा। हेरोदेस रोम का राज्यपाल था। उसने यह राजाज्ञा निकाली कि जितने भी बालक दो साल के हैं या उससे छोटे है, वे मार डाले जाएँ। परन्तु एक स्वर्गदूत ने यूसुफ और मरियम को चेतावनी दी कि वे यीशु को साथ लेकर मिश्र को भाग जाएँ।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

72

शैतान ने यीशु को उसके सेवा कार्य के समय में परीक्षा में डाला। वह परमेश्वर की पापी संसार को बचाने की योजना में विघ्न डालने की चेष्टा कर रहा था। मसीह के क्रूस पर लटके शरीर को देख कर शैतान ने सोचा कि उसने युद्ध में विजय प्राप्त कर ली है। परन्तु एक खाली कब्र निश्चित रूप से शैतान की हार थी।

73

मसीह जी उठे और अपने पिता के सिंहासन पर बैठ गये। भविष्यवाणी अपने समय में पूरी हुई। परमेश्वर के पुत्र को नाश करने के प्रयत्न में असफल होकर शैतान ने अपना क्रोध स्त्री या मसीही कलीसिया पर उतारा।

74

एक शिष्य को छोड़ कर बाकी सभी चेलों की शहीदों की मृत्यु हुई। यदि आप किसी माता -पिता को चोट पहुँचाना चाहते हैं तो आप किस प्रकार उन्हे सबसे गहरी चोट पहुँचा सकते हैं? उनके बच्चों को चोट पहुँचाने के द्वारा। शैतान यीशु को नहीं छू सकता था क्योंकि वे अब स्वर्ग में थे। इसलिए उसने यीशु के अनुयायियों पर धावा बोला।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

75

और पौलुस प्रेरित का सिर रोम की दीवारों के बाहर काट दिया गया। मसीहियों को सताया गया और काल कोठरियों में डाला गया। उनमें से बहुतों ने अपने रक्त से अपनी गवाही पर मुहर लगायी।

76

जब तक शिष्य जीवित थे, तब तक कलीसिया सच्चाई के लिए स्थिर खड़ी थी। शिष्यों की मृत्यु के बाद, समय बीत जाने पर, कुछ मसीहियों ने अपने विश्वास के साथ समझौता कर लिया और झूठी शिक्षाएं कलीसिया के अन्दर आ गई।

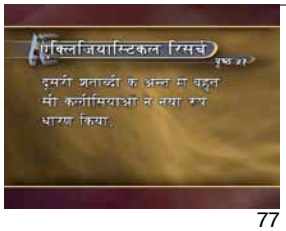

77

"दूसरी शताब्दी के अन्त में बहुत सी कलीसियाओं ने नया रूप धारण किया;

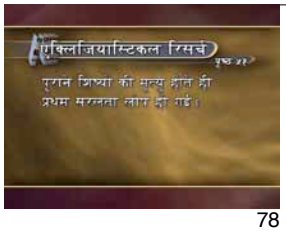

78

पुराने शिष्यों की मृत्यु होते ही प्रथम सरलता लोप हो गई।"

एक्लिजियास्टिकल रिसर्च,पृष्ठ ५१

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

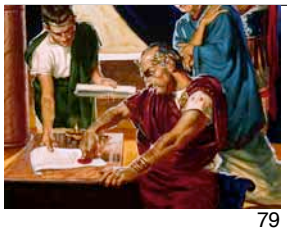

79

चौथीं शताब्दी में सम्राट कांस्टेनटाइन ने रोमी राज्य को स्थिर करने के लिए मूर्तिपूजकों और मसीहियों को एक साथ करके एक महान धर्म का निर्माण करने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप मसीहियत बहुत प्रसिद्ध हो गई। मूर्तिपूजकों को कलीसिया में बपतिस्मा दिया गया और वे अपने बहुत से विश्वासों और व्यवहारों को साथ लेकर आए। जैसे ही कलीसिया ने इन गलत विश्वासों को अपनाया, उसने अपने उद्देश्य को खो दिया।

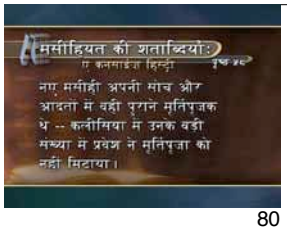

80

एक इतिहासकार ने लिखा, "नए मसीही अपनी सोच और आदतों में वही पुराने मूर्तिपूजक थे -- कलीसिया में उनके बड़ी संख्या में प्रवेश ने मूर्तिपूजा को नहीं मिटाया।

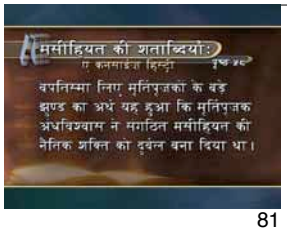

81

बपतिस्मा लिए मूर्तिपूजकों के बड़े झुण्ड का अर्थ यह हुआ कि मूर्तिपूजक अंधविश्वास ने संगठित मसीहियत की नैतिक शक्ति को दुर्बल बना दिया था।"
सेन्चुरिज़ आफ क्रिश्चियानिटी: ए कनसाइज़ हिस्ट्री, पृ० ५८

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

82

तब भी इस बीच बहुत से मसीही परमेश्वर की सच्चाई के प्रति विश्वस्त रहे और कलीसिया में आते बदलाव का विरोध किया। बहुत से मसीही अपने स्थान पर दृढ़ होने के कारण सताए गए। शीघ्र ही रोमी सम्राटों ने घोषणा जारी की कि राज्य की कलीसिया के झूठी रीतियों को स्वीकार न करने का अपराध मृत्यु दण्ड के योग्य है।

83

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१३)

यह सब आगे से विचार लेने के बाद यूहन्ना ने लिखा,"अजगर ने...उस स्त्री को जो बेटा जनी थी, सताया।"

प्रकाशितवाक्य १२:१३

और उस स्त्री का क्या हुआ?

84

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:६)

वह "...उस जंगल को भाग गई, जहाँ परमेश्वर की ओर से उसके लिए एक जगह तैयार की गई थी,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

85

कि वहाँ वह एक हजार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए।"

प्रकाशितवाक्य १२:६

ध्यान दीजिए कि परमेश्वर उस समय को प्रकट करता है जब कि उसके लोग सताए जाएंगे: १,२६० दिन। हमने पहले देखा है कि बाइबिल में यह भविष्यवाणी की गई है कि एक दिन एक साल के बराबर हैं।

86

(मूलपाठः यहेजकेल ४:६)

यहेजकेल ने लिखा है, "मैंने तेरे लिए एक वर्ष की सन्ती एक दिन ठहराए हैं।"

यहेजकेल ४:६।

87

इस प्रकार परमेश्वर के विश्वस्त लोगों पर की जाने वाली सताहट को १२६० वर्षों के लिए होना था जैसे कि प्रकाशितवाक्य में भविष्यवाणी की गई थी।

88

इतिहास बाइबिल की इस भविष्यवाणी को प्रमाणित करता है। रोमी सम्राट जस्टीनियन ने रोम के सेनापति बेलिसारियस को यह आज्ञा दी थी कि अंतिम दो एरियान शक्तियों को, जो रोम में कलीसिया का विरोध करती थीं, समाप्त कर दिया जाय।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

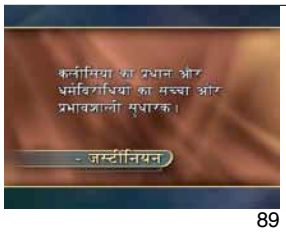

89

५३८ ईसवी में अन्तिम एरियान शक्ति को समाप्त कर दिया गया और जस्टीनियन ने रोम के बिशप को "कलीसिया का प्रधान और धर्मविरोधियों का सच्चा और प्रभावशाली सुधारक।" होने का अधिकार दिया। अब
'धर्म विरोधी' कहे जाने वाले लोगों की सताहट का काम आरम्भ हुआ।

90

और विश्वस्त मसीही जिन्होंने परमेश्वर के वचन में पाई जाने वाली सच्चाई को मानना जारी रखा उन्होंने यह पाया कि अपने विश्वास को बचाने का सर्वोतम उपाय केवल भाग जाना था जैसा प्रकाशितवाक्य में भविष्यवाणी की गई थी। सो वह 'स्त्री' जंगल को भाग गई।

91

वाल्डेनसेस, अलबिगेनसेस और दूसरे विश्वासी मसीही उत्तरी इटली और दक्षिण फ्रांस में आल्पस् पर्वत की चोटियों पर भाग गए, और ह्यूगनाट्स पूरे फ्रांस में फैल गए। वे निर्जन घाटियों, सुदूर गुप्त गुफाओं, और ऊँचे पर्वतों में बस गए। उन्हें साधारण अपराधियों की तरह ढूढ़ा गया और बहुत से लोग मार डाले गए। उनका अपराध? वे यीशु की शिक्षाओं को नहीं त्यागना चाहते थे।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

92

हजारों मसीहियों ने अपने विश्वास से समझौता करने की अपेक्षा मरना अच्छा समझा। कुछ इतिहासकार इनकी संख्या का अनुमान लगभग ५०,०००,००० लगाते हैं और उनमें से बहुत लोग ऐसे मसीहियों के द्वारा मारे गए जो यह विश्वास करते थे कि वे ऐसा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कर रहे थे!

93

परमेश्वर की सच्चाई की अन्त में विजय हुई। बाइबिल का लोगों की भाषाओं में अनुवाद किया गया और छापने के यंत्र के अविष्कार के द्वारा पूरी दुनिया में फैलाया गया।

अब परमेश्वर की सच्चाई को छुपना नहीं था। अब इसका प्रकट होना था!

94

निडर सुधारकों ने परमेश्वर के वचन को लोगों तक पहुँचाया। हस्स और जेरोम जैसे कुछ सुधारकों को खूंटे से बाँध कर जलाया गया।

95

दूसरे, जैसे लूथर, विक्लिफ और टिन्डेल को ढूंढ़ कर उन्हें सताया गया।

96

पर अमेरिका की खोज से यूरोप के सताए मसीहियों को नई स्वतंत्रता और नई शरण दी गई।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

97

एक नए राष्ट्र के किनारों पर नागरिक और धार्मिक स्वतंत्रता की नींव रखी गई।

98

(दृश्य)

समझौते और सताहट का यह काल, जिसकी प्रकाशितवाक्य के १२ अध्याय में भविष्यवाणी की गई थी, अन्ततः १७९८ में समाप्त हुआ जब नेपोलियन ने सेनापति बर्थियर को पोप को बन्दी बनाने के लिये भेजा – ५३८ ईसवी में सताहट आरम्भ होने के ठीक १२६० वर्षों के बाद।

99

जब इस भविष्यवाणी का समय पूरा होने को आया, तब परमेश्वर के पास एक विश्वासियों का समूह था जो बाइबिल के प्रति और इसकी शिक्षा के प्रति विश्वस्त था ।भविष्यवाणी में था कि शैतान परमेश्वर की उस कलीसिया पर अपना क्रोध दिखाएगा जो इस भविष्यवाणी के समय के बाद शेष थी:

100

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१७)

"और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उसकी शेष सन्तान से लड़ने को गया,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

101

जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।"
प्रकाशितवाक्य १२:१७

102

एक बचा हुआ टुक़डा किसी कपड़े का अंतिम भाग है जिसे एक बड़े टुकड़े से अलग कर दिया गया है। वैसे ही, परमेश्वर की "बची हुई" कलीसिया वह कलीसिया है जो समय के अन्तिम भाग में यीशु के पृथ्वी पर वापस लौटने से पहले होगी।

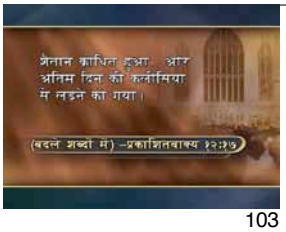

103

इस प्रकार इस पद का शाब्दिक अनुवाद करके हम कह सकते हैं कि शैतान क्रोधित हुआ...और अंतिम दिन की कलीसिया से लड़ने को गया।" शैतान कुपित है क्योंकि परमेश्वर के लोग इन अंतिम दिनों में भी परमेश्वर की सच्चाई के पीछे चलते हैं।

104

यूहन्ना दो विशिष्ट गुणों का वर्णन करता है जिसके द्वारा हम इस अंतिम दिन की कलीसिया को पहचान सकते हैं
"अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उसकी शेष सन्तान से लड़ने को गया,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

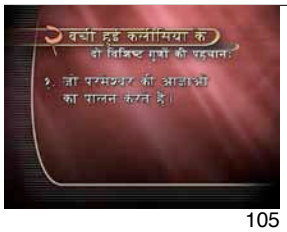

105

जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर है।"

प्रकाशितवाक्य १२:१७

यह बची हुई कलीसिया वह है जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानती है।

106

२. जो यीशु की गवाही देते हैं।

107

परन्तु क्या प्रत्येक कलीसिया यह शिक्षा नहीं देती कि मसीही लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना चाहिए?

ठीक ऐसा नहीं, परन्तु आज बहुत सी धार्मिक संस्थाएँ अपने सदस्यों को किसी न किसी रूप में परमेश्वर की कुछ आज्ञाओं का उल्लंघन करना सिखाते हैं। उदाहरण स्वरूप, कुछ कलीसियाओं के सदस्यों को मूर्तियों के समक्ष झुकने के लिए सिखाया जाता है। दूसरे परमेश्वर के नाम की पवित्रता पर ध्यान नहीं देते।

108

(मूलपाठः निर्गमन २०:८ -११)

और धार्मिक संसार के बहुत से लोगों ने चौथी आज्ञा को, जो सृष्टि का स्मारक है, भुला दिया है।

"विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

109

छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना,

110

परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है।"

निर्गमन २०:८-१०

111

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१७)

न केवल परमेश्वर की बची हुई, या अंतिम दिन की कलीसिया, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानती है परन्तु भविष्यवाणी यह भी कहती है कि यह "यीशु मसीह की गवाही देने पर स्थिर है।"

(प्रकाशितवाक्य १२:१७)

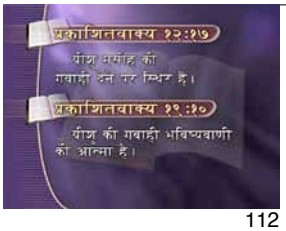

112

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:१०)

प्रकाशितवाक्य १९:१० में कहता है, "यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।"

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

113

परमेश्वर के अन्तिम दिन की कलीसिया के पास आत्मा का वरदान होगा और भविष्यवाणी की आत्मा भी होगी। बाद में हम इस विशेष वरदान का अधिक गहराई से अध्ययन करेंगे। परमेश्वर हमें अपनी अंतिम कलीसिया को ढूंढने के लिए बहुत से चिन्ह देता है। उसके लोग दुनिया में सुसमाचार पहुँचाने के लक्ष्य में व्यस्त होंगे, क्योंकि यीशु ने अपनी कलीसिया को आज्ञा दी है:

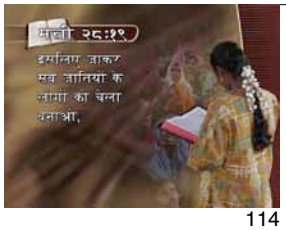

114

(मूलपाठ: मत्ती २८:१९,२०)

"इसलिए जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ,

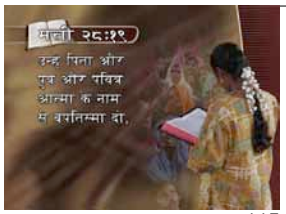

115

उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,

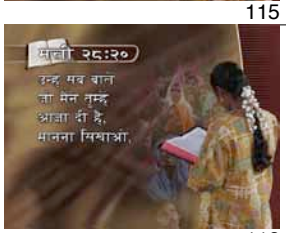

116

उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ,

117

मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ ...

आमीन।"

मी २८:२९, २०

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

118

पूरे संसार में अनन्त सुसमाचार के प्रचार की आज्ञा का संकेत प्रकाशितवाक्य १४ में आकाश में उड़ते हुए तीन स्वर्गदूतों द्वारा दिया गया है। इस तिगुने सुसमाचार का पहला भाग दो महान सच्चाइयों को सामने लाता है जिसको हमें प्रत्येक व्यक्ति के साथ बांटना है।

119

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १४:६,७)
"फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच उड़ते हुए देखा,

120

जिसके पास पृथ्वी पर के रहने वालों को सुनाने के लिए सनातन सुसमाचार था -

121

हर एक जाति और कुल और भाषा और लोगों को -

122

उस ने बड़े शब्द से कहा, "परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है;

123

उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।"
प्रकाशितवाक्य १४:६,७

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

124

पृथ्वी के अंतिम समय में रहने वालों के लिए यह चेतावनी है कि वे यह स्मरण रखें कि न्याय का दिन आ पहुँचा है। यह परमेश्वर की सृष्टि की महान स्मृति, सातवें दिन के सब्त को भी स्मरण कराता है। इस तिगुने समाचार का दूसरा भाग आठवें पद में पाया जाता है:

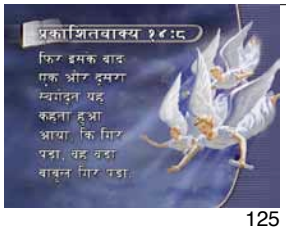

125

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १४:८)

"फिर इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पडा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा,

126

जिसने अपने व्यभिचार की कोपमयी मदिरा सारी जातियों को पिलाई है।"

प्रकाशितवाक्य १४:८

यह सुसमाचार परमेश्वर के सच्चे लोगों को बुलाता है कि वे भ्रमित धर्मी संसार से अलग हो जाएं। उनका ध्यान स्वधर्म त्यागियों की बढ़ती संख्या की ओर भी किया गया है। अंतिम, ओर गम्भीर बुलावा इस भविष्यवाणी के तीसरे भाग में दिया गया है:

127

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १४:९, १०)

"फिर तीसरा स्वर्गदूत उनका अनुसरण करते हुए बड़े शब्द से यह कहते हुए आया,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

128

"जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करें, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले

129

वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा पिएगा।"
प्रकाशितवाक्य १४:९, १०

130

उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करने या उसकी छाप लेने के विरुद्ध दुनिया को चेतावनी दी जाती है।

131

(मूलपाठः यूहन्ना १०:१६)
यीशु ने कहा, "और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं, मुझे उनका भी लाना अवश्य है,

132

और वे मेरा शब्द सुनेगी, तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा।"
यूहन्ना १०:१६

133

सभी कलीसियाओं में परमेश्वर के विश्वस्त अनुयायी हैं, परन्तु एक समय आएगा जब एक ही भेड़शाला – सच्ची कलीसिया होगी। यीशु ने कहा कि उनकी भेड़ें उन दूसरी भेड़शालाओं से बाहर निकल आने के लिए बुलाई जायेंगी जहाँ लोग परमेश्वर की शिक्षाओं पर सावधानी से नहीं चलते.।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

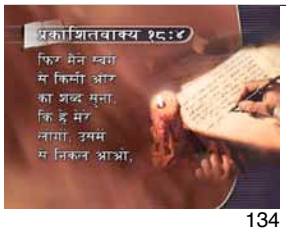

134

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १८:४)

प्रकाशितवाक्य के लेखक ने उस समय के उद्देश्य के विषय में कहा :–"फिर मैंने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ,

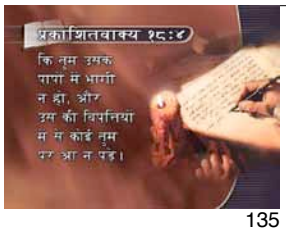

135

कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उस की विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।

प्रकाशितवाक्य १८:४

परमेश्वर के विश्वस्त अनुयायी अन्तिम दिनों के धार्मिक गलतियों और भ्रम से बाहर बुलाए जायेंगे। आप ध्यान देना चाहेंगे कि बाइबिल किस प्रकार उन लोगों का वर्णन करती है जो उस धार्मिक भ्रम से बाहर बुलाए जायेंगे जो यीशु के लौटने से पहले होगी।

136

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १४:१२, १४)

"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं..."

137

"और मैंने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

138

जिसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है।"
प्रकाशितवाक्य १४:१२,१४

139

आइए, संक्षेप में बाइबिल में दी गई परमेश्वर की अंतिम कलीसिया के विशिष्ट गुणों को दोहराएं:

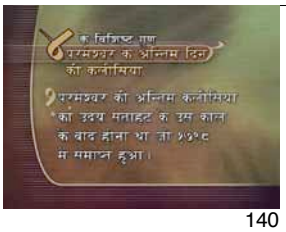

140

परमेश्वर की अन्तिम कलीसिया का उदय सताहट के उस काल के बाद होना था जो १७९८ में समाप्त हुआ।

141

उनके पास यीशु का विश्वास होगा, जो परमेश्वर की समस्त आज्ञाओं को मानने में उनकी अगुवाई करेगा।

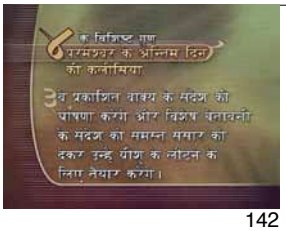

142

वे प्रकाशितवाक्य के संदेश की घोषणा करेंगे और विशेष चेतावनी के संदेश को समस्त संसार को देकर उन्हें यीशु के लौटने के लिए तैयार करेंगे।

143

उनके पास भविष्यवाणी के वरदान के साथ आत्मा का वरदान भी होगा।

144

पहली दृष्टि में सारी कलीसियाएं एक सी जान पड़ती हैं,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

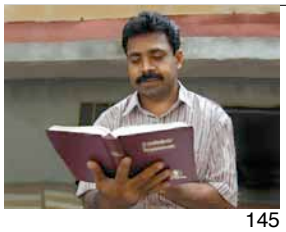
145

परन्तु जब आप परमेश्वर के पवित्र वचन में सच्च के वर्णन का अध्ययन करते हैं, तो उन कलीसियाओं को जानना अधिक सरल हो जाता है जिनके पास ये विशिष्ट गुण नहीं हैं। शायद आप इन सब कलीसियाओं के बीच परमेश्वर की सच्ची और अंतिम कलीसिया को ढूंढ़ पाने का प्रयत्न करते रहे हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि केवल एक ही सच्ची कलीसिया है। वह है बाइबिल पर विश्वास करने वाली, सब्त का पालन करने वाली, तथा मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करने वाली संसार -व्यापी कलीसिया। इसी लिए मैं एक सेवेन्थ-डे एडवेन्टिस्ट हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि इस कलीसिया में सच्ची कलीसिया के सारे विशिष्ट गुण हैं।

146

जैसे हमने इस अनोखी भविष्यवाणी का अध्ययन किया है तो आप स्पष्ट देख सकते हैं कि परमेश्वर के पास एक विशेष संदेश है और उस संदेश को देने के लिए विशेष लोग हैं।

परन्तु इन बाइबिल की सच्चाईयों को जानना ही पर्याप्त नहीं है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

147

वह शांति और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जो यीशु मसीह के साथ पूरी तरह चलने से आती है, आप के लिए यह भी आवश्यक है कि आप आगे बढ़ें और परमेश्वर के वचन में प्रकट की गई सच्चाई का अनुसरण करें, जैसा कि यीशु ने कहा था,

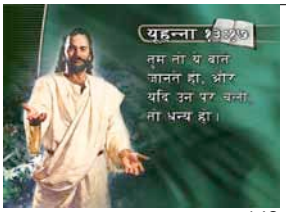

148

(मूलपाठः यूहन्ना १३:१७)

"तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।"

यूहन्ना १३:१७

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

149

परमेश्वर आप को निमंत्रण देता है कि आप अपने जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय लें। क्या आप विश्वास करते हैं कि इन सभाओं में आपने परमेश्वर का वचन सुना है? क्या आप विश्वास करते हैं कि इन सभाओं में आपने परमेश्वर की सच्चाई सुनी है? क्या आप विश्वास करते हैं कि इन सभाओं में पवित्र आत्मा ने आपके हृदय को प्रभावित किया है? जब हम परमेश्वर का वचन और उसकी सच्चाई को सुनते हैं, तब पवित्र आत्मा निर्णय लेने में हमारे मनों कों प्रभावित करता है।

अब निर्णय लेने का समय है। क्या आप कहना चाहेंगे, "हाँ प्रभु, मैं आपकी सच्चाई का अनुसरण करना चाहता हूँ। हाँ, यीशु मैं पवित्र आत्मा की अपील को स्वीकार करता हूँ। अब मैं सभी प्रकार से आपके पीछे चलूंगा। मैंने सच्चाई के रास्ते पर चलना स्वीकार किया है।" यदि यह आपका निर्णय है तो क्या आप इसी समय खड़े होना चाहेंगे जब हम प्रार्थना करते हैं?